ईश्वर का वचन स्पष्ट रूप से सिखाता है:

रोमियों 14:10-12 (ESV)
“परन्तु तू अपने भाई पर न्याय क्यों करता है? या तू, अपने
भाई को क्यों तुच्छ समझता है? क्योंकि हम सब ईश्वर के न्यायाधीश के सामने खड़े होंगे। जैसा लिखा है, ‘जैसा मैं
जीवित हूं, परमेश्वर कहता है, हर घुटना मेरे आगे झुकेगा, और
हर जीभ परमेश्वर को स्वीकार करेगी।’ इसलिए हम में से
प्रत्येक अपने आप के लिए ईश्वर को जवाब देगा।”

निर्णय का दिन आने वाला है – ऐसा दिन जब प्रत्येक व्यक्ति अकेले ईश्वर के न्यायाधिकरण के सामने खड़ा होगा और अपने जीवन का हिसाब देगा – चाहे वह धार्मिक हो या पापी।

सभोपदेशक 3:17 (NIV) इस सत्य को उजागर करता है: “मैंने अपने
आप से कहा, ‘ईश्वर धर्मी और अधर्मी दोनों का न्याय करेगा, क्योंकि हर काम का समय होता है, और हर कार्य की जांच का समय
आता है।’”

1. न्याय का स्वभाव

धर्मियों का न्याय अधर्मियों के न्याय से पूरी तरह अलग है। धर्मियों को सजा के लिए नहीं, बल्कि पुरस्कार के लिए न्याय किया जाता है। ईश्वर विश्वास और जिम्मेदारी की परीक्षा लेते हैं:

लूका 19:17 (NIV) – “अच्छा, तू अच्छा सेवक! क्योंकि तू थोड़ा
काम करने में विश्वासयोग्य था, इसलिए तू दस नगरों का
अधिकारी बनेगा।”

विश्वासी लोग अपनी विश्वासयोग्यता के अनुसार पुरस्कार प्राप्त करेंगे; जो कम विश्वासयोग्य थे, उन्हें कम पुरस्कार मिलेगा। लेकिन विश्वासघाती और अधर्मी – जो मसीह को नकारते हैं – उन्हें अग्नि के सरोवर में शाश्वत दंड भुगतना होगा:

प्रकाशितवाक्य 20:14-15 (ESV) – “फिर मृत्यु और अधोलोक को
आग के सरोवर में फेंक दिया गया। यह दूसरी मृत्यु है, अग्नि
का सरोवर। और यदि किसी का नाम जीवन के पुस्तक में नहीं लिखा पाया गया, उसे भी अग्नि के सरोवर में फेंक दिया गया।”

सजा की गंभीरता ज्ञान और अवसर के अनुसार होती है:

लूका 12:47-48 (KJV) – “और वह सेवक जिसने अपने स्वामी की
इच्छा जान ली और अपने आप को तैयार न किया, न उसके अनुसार
किया, उसे कई चोटें दी जाएँगी। पर जो नहीं जानता और दोषपूर्ण काम करता है, उसे कम चोटें मिलेंगी। क्योंकि जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा…”

2. हर कर्म और शब्द के लिए उत्तरदायित्व

उस दिन कुछ भी छिपा नहीं रहेगा। हर विचार, हर इरादा, हर शब्द और हर कार्य – चाहे सार्वजनिक हो या गुप्त – उजागर होंगे:

लूका 12:2-3 (NIV) – “कोई भी चीज़ छिपी नहीं रहेगी जो प्रकट नहीं होगी, और कोई भी गुप्त बात ऐसी नहीं होगी जो ज्ञात न हो। जो कुछ तुम अंधेरे में कहोगे वह प्रकाश में सुना जाएगा, और
जो तुम अंदरूनी कक्षों में कान में फुसफुसाओगे, वह छतों से घोषित किया जाएगा।”

मत्ती 12:36-37 (ESV) – “मैं तुमसे कहता हूँ, न्याय के दिन मनुष्य हर व्यर्थ शब्द का हिसाब देंगे। अपने शब्दों से तुम

न्याय पाओगे और अपने शब्दों से तुम्हारा निंदा भी होगी।”

यह न्याय व्यक्तिगत है, सामूहिक नहीं। हर व्यक्ति अकेले ईश्वर के सामने खड़ा होता है। आप समाज, परिवार या दोस्तों को दोष नहीं दे सकते।

गलातियों 6:5 (NIV) – “क्योंकि प्रत्येक को अपनी जिम्मेदारी उठानी चाहिए।”

3. उद्धार के लिए बुलावा

यदि आपने अपना जीवन अभी तक यीशु मसीह को समर्पित नहीं किया है, तो आज ही का दिन है। उद्धार आवश्यक है – न केवल न्याय से बचने के लिए, बल्कि अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए।

यूहन्ना 3:16-17 (ESV) – “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दिया, ताकि जो कोई उस
पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत को नष्ट करने के लिए नहीं

भेजा, बल्कि जगत के उसके द्वारा उद्धार के लिए।”

सच्चा उद्धार पश्चाताप, पाप से वापसी और मसीह के प्रति पूर्ण समर्पण में निहित है:

प्रेरितों के काम 3:19 (NIV) – “इसलिए पश्चाताप करो और परमेश्वर की ओर मुड़ो, ताकि तुम्हारे पाप मिट जाएँ और प्रभु
से ताज़गी के समय आएँ।”

इस पश्चाताप में शामिल हैं: पापी व्यवहार त्यागना, सांसारिक सुखों को छोड़ना, और पवित्र जीवन के लिए प्रतिबद्ध होना:

शराब, धूम्रपान और अनैतिकता से परहेज करें।
सांसारिक संगीत, वीडियो और अन्य प्रभावों को हटाएँ।
पूरी तरह से परमेश्वर के वचन के अधीन रहें और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में जीवन बिताएँ।

4. क्षमा और शांति का आश्वासन

यदि आप दिल से पश्चाताप करते हैं, तो ईश्वर की दया और अनुग्रह आपको क्षमा और आंतरिक शांति देंगे:

1 यूहन्ना 1:9 (NIV) – “यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, वह विश्वसनीय और न्यायपूर्ण है कि वह हमारे पापों को क्षमा करे और हमें सभी अधर्म से शुद्ध करे।”

विश्वासी के हृदय में आने वाली शांति क्षमा की अलौकिक पुष्टि है, जो समझ से परे है:

फिलिप्पियों 4:7 (ESV) – “और परमेश्वर की शांति, जो सभी समझ से परे है, वह तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह
यीशु में सुरक्षित रखेगी।”

5. आत्मा में चलना

पवित्र आत्मा को दबाओ मत। एक सच्ची चर्च, एक परिपक्व ईसाई मेंटर, या ऐसा मंत्रालय खोजो जो परमेश्वर का वचन सत्यनिष्ठापूर्वक सिखाता हो। स्वयं बाइबल पढ़ना सीखो और शास्त्रानुसार बपतिस्मा ग्रहण करो। पवित्र आत्मा तुम्हें सभी सत्य में मार्गदर्शन करेगा और तुम्हारे मार्ग की रक्षा करेगा:

यूहन्ना 16:13 (NIV) – “परंतु जब सत्य की आत्मा आएगी, तो वह तुम्हें सम्पूर्ण सत्य में मार्गदर्शन करेगा; क्योंकि वह
अपने आप से नहीं बोलेगा, बल्कि जो कुछ वह सुनेगा, वही बोलेगा,
और जो आने वाला है, वह तुम्हें बताएगा।”

व्यावहारिक बुलावा:
आज निर्णय लो: मैं किसी भी कीमत पर यीशु मसीह का अनुसरण करूंगा – व्यक्तिगत रूप से। अपना क्रूस उठाओ, स्वयं को अस्वीकार करो, सभी पापों का पश्चाताप करो, और केवल परमेश्वर के लिए जीवन जीने का संकल्प करो।

प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दें। इस संदेश को साझा करो ताकि अन्य लोग न्याय के दिन से पहले मसीह का अनुसरण करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp